Ravi Kant Anand (H.O.D)
Dept. of Geography

नवनिश्चयवादी (ग्रीफिंथ टेलर)

(Neo-Determinism)

निश्चयवाद की घटती स्वीकारिता तथा संभववाद की बढ़ती स्पष्टता विधि तंत्रतात्मक निश्चयवाद तथा संभववाद के चरम दृष्टिकोणो के मध्य के मार्ग संबंधी मानव-पर्यावरण संबंध का चिंतन मध्य 20 वीं शताब्दी मे स्पष्ट उभरने लगा। यद्यपि भूगोल का प्रचलित पेराडाइन प्रदेशिक भूगोल बन गया था, लेकिन मानव-पर्यावरण के संबंधो की गवेसना अब भी भूगोल का प्रमुख उद्देश्य बना हुआ था, और उसकी पहचान थी, फलस्वरूप प्राकृति पर्यावरण को नियंत्रक एवं निश्चयात्मक बताने के उपागम तथा संभववाद मे मानव-चुनाव की स्वतंत्रता दोनो पर प्रश्न उठे तथा संतुलित मध्यमार्गी विचार प्रस्तुत हुए, हरबर्टसन, वोवेन, मार्गन बुलस्चि स्पेट ने इस प्रकार की विचार धारा को प्रकट किया है।

लेकिन ग्रीफिथ ने जो मानव-पर्यावरण संबंध का संयंत्र एवं

Scanned with CamScanner

बुद्धिमता पूर्ण विचार दिया गया, जिसे वह स्टॉप-एण्ड-गो निश्चयवाद कहता है।

(i) नव-निश्चयवाद या वैज्ञानिक निश्चयवाद को

(ii) रूप मे अधिक चर्चित एवं स्वीकृत रहा। ग्रीफिथ टेलर के नवनिश्चयवाद की अवधारणा का सार यह है कि पृथ्वी की सतह पर कुछ अधिक संपन्नता के क्षेत्रो मे प्राकृति मानव को जीवन यापन के लिए कई संभवनाएँ देती है, लेकिन उसके बहुत बड़े भाग अति उबर-खबर, अतिशुष्क, अतिशीत या अतिवर्षा वाले है, प्रकृति द्वारा इन बड़ी सिमाओ पर ध्यान दिए बिना जो भी मानव समुदाय कार्य करेगा, उसे विनाश एवं आपदा का ही सामना करना पड़ा, प्रकृति ने किसी भी देश या क्षेत्र के लिए सर्वोत्तम आर्थिक कार्यक्रम पहले से ही बना रखा है, यदि मनुष्य समुदाय समझदार है तो उसे प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा जो संकेत दिए गए। उनसे विचलन नही करना चाहिए, बल्कि उन संकेतो के अनुरूपो अपने आर्थिक कार्यक्रम चलाने चाहिए। टेलर इस बात पर ध्यान दिलाते है कि प्राकृति पर्यावरण मानव के लिए पूर्णतः निश्चयवादी नही है, लेकिन उनसे पृथ्वी की सतह पर

Scanned with CamScanner

एक व्यापक ढाँचा बनाया है, बहुत बड़े क्षेत्र मरुस्थल है। हीमछादित है, पर्वतीय एवं पठारी है या दलदली तथा घने वनो से अछादित है, इन प्राकृतिक सीमाओं (Limitations) के रूप मे प्राकृतिक हमेशा एक प्रभावी शक्ति है जो मानव के क्रियाओ को प्रभावित करते है, मनुष्य कभी इनके प्रभावो को कुछ काम तो कर सकता है, लेकिन उनके प्रभाव से मुक्त नही हो सकता है, पर्यावरण के इस व्यापक ढाँचे मे मानव समुदाय की स्थिति की तुलना वह सड़क मार्गों के ढाँचे मे यतायात नियंत्रक से करके अपने विचार को स्पष्ट करता है, यातायात नियंत्रक केवल यातायात की गति को तीव या मंद तो कर सकता है पर उसकी दिशा मे परिवर्तन नही कर सकता है और यातायात को सड़क ढाँचे की सीमा के अंदर रहना पड़ेगा, ढाँचे से यातायात के बाहर निकलने का अर्थ दुर्घटना तथा आपदा है।

Scanned with CamScanner

अमेरिकी भूगोलवेत्ता मुख्य रूप से उलमान तथा हार्टशॉन ने विचार प्रस्तुत किए कि मानव पर्यावरण सँबंध मे मानव तत्वो मे सँभव के प्रौद्योगिकी प्रकृति स्तर के अतिरिक्त मानव मनोवृति, जीवन उद्देश्य, समाज की सांस्कृति, विचार तथा बोध की विविधता प्राकृतिक पर्यावरण को भिन्न अर्थ देते है, उसी अर्थ के अनुरूप पर्यावरण का महत्व समाज विशेष के लिए होता है। इस प्रकार प्राकृति पर्यावरण सामाजिक या सांस्कृतिक लक्षणो से संसोधित होता है, इन्ही सांस्कृतिक लक्षणो से संसोधित पर्यावरण का मानव पर प्रभाव पड़ता है, केवल ऐसे पर्यावरण की वास्तव मे उपस्थिति एवं अर्थ निरपेक्ष होता है। Natural

The End